रात्रिक्लास 1-4-68 ओमशान्ति " शिव बाबा याद है? "

शिव बाबा याद है? शिव बाबा याद है तो सम्बन्ध है, याद न है तो बन्धन है। जो इस सम्बन्ध को समझ गये वह तो कहते हैं बाबा बन्धन से छुड़ाओ। एक सम्बन्ध दूसरा है बन्धन। सम्बन्ध है सतयुग का बन्धन है कलियुग का। अभी सम्बन्ध है तो पूरा सम्बन्ध है शिव बाबा से। सम्बन्ध में फिर आधा कल्प रहेंगे। बन्धन खलास। बन्धन और सम्बन्ध का है खुल। बाप बच्चे बच्चे कह बात करते हैं। यह प्रवृति मार्ग का ज्ञान है। सन्यासियों का प्रवृति मार्ग है नहीं। प्यार है ही प्रवृति मार्ग वालों में। निवृति मार्ग में प्यार नहीं। वह घृणा करते हैं। सम्बन्ध में खुशी होती है। सन्यासियों को बन्धन लगता है। यह तो सम्बन्ध है खुशी होती है। और जो भी सम्बन्ध में आते हैं उनको खुशी का पारा चढ़ता है। जो पक्के निश्चय बुधि है। यहां जो आते हैं मैं एक एक से पूछ सकता हूं सच्चा सम्बन्ध है या बन्धन है। यह सम्बन्ध तो आधा कल्प चलता है। बन्धन में दुःख है। सम्बन्ध मे सुख है। नाम ही है बन्धन। यह है सम्बन्ध। कोई तो सम्बन्धको छोड़ उस बन्धन में चले जाते हैं। उसमें ही अपने को अच्छा समझते हैं। वह लाईफ बहुत पसन्द आती है। इस सम्बन्ध को जैसे जेल समझते हैं। ऐसा पार्ट कोई का बजा नहीं है। इसका तो वन्डरफुल है। यहां भी उनका पार्ट बड़ा अच्छा था। ममा बाबा सब जैसे उनके डैरेक्शन से पार्ट बजाते थे। बाबा भी वन्डरफुल है तो वन्डरफुल बातें ही यहां होती है। भक्ति मार्ग में नहीं हो सकती। निश्चय फिर मैफिर संशय हो जाता है। तो क्या हाल हो जाता है। अभी2 बहुत निश्चय है फिर कोई भज़ा ही नहीं। उतरना और चढ़ना। इसमें बहुत हैं। यह है रूहानी उतरना और चढ़ना। तीर्थों पर भी होते हैं। वह है जिसमानी। दशाएं फिरती रहती है। बृहस्पत की दशा है ईश्वरीय, शनिचर की दशा है नीच। अवस्था ही नीचे ऊपर हो जाती है। पास्ट परजेन्ट फ्युचर को और कोई जानते नहीं है। एक बात सिर्फ बच्चे समझ जाये हद के और बेहद के बाप से वर्सा मिलता है। यह है दुःख की दुनिया। वह है सुख की दुनिया। यह है संगम की दुनिया। सब से सुख की। सतयुग से संगम की लाईफ बहुत अच्छी है। शान्ति से भी यह अच्छी। बेहद के बाप साथ हम रहते हैं। बाप टीचर गुरु एक ही है। यह कहां भी लिखा हुआ नहीं है। कृष्ण के इतने बच्चे एडाप्ट हो न सके। बाप के तो एडाप्टेड बच्चे हैं ना। तुम बहुत2 भाग्यशाली हो तब बुधि में बैठता है। यह भी जानते हैं सभी अपने2 समय पर आते हैं। इसमें फिकारात कोई नहीं। फिक्र से फारग। सतगुरु के तुम बच्चे हो कोई भी फिक्र की बात नहीं। याद में ही विघ्न पड़ती है माया की। बच्चों को बुधि में है वापस जाना ही है सभी को। वापस जाने लिए हम पढ़ाई पढ़ते हैं। पढ़ाई की रिजल्ट है ही नई दुनिया के लिए। इसलिए वास्तव में रहते करते, खाते, पीते इन सभी चीज़ों से उपराम होना है। पुरानी दुनिया खत्म होनी है। इसलिए कोई भी चीज़ में ममत्व नहीं। पुरानी चीज़ में थोड़े ही ममत्व होता है। एक दो को तुम बहुत तकदीरवान समझेंगे। पुरुषार्थ कर औरों की भी आप समान तकदीर बनानी है। अच्छा बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

रात्रिक्लास 2-4-68 ओमशान्ति। मन्मनाभव

रायल स्टुडन्ट। नशा रहता है ना बच्चों को। क्योंकि रायल स्टुडन्ट हो। बेहद का मालिक पढ़ा रहे हैं तो तुम कितने रायल स्टुडन्ट हो। तो फिर रायल स्टुडन्ट की फिर रायल चलन भी चाहिए। तब बाप का शो भी कर सके। विश्व में शान्ति स्थापन कर रहे हो। निमित बने हो श्रीमत पर। तो कितनी शान्ति की प्राईज़ मिलती है। प्राईज़ भी एक जन्म के लिए थोड़े ही है। जन्म-जन्मान्तर के लिए मिलती है। बच्चे बाप की शुक्रिया क्या मनावेंगे। बाप आपे ही आकर वस्तु हाथ में देते हैं। बच्चों को पता था क्या कि बाप आकर यह देंगे। बाप कहते हैं मुझे याद करो। और पवित्र बनो। बाप कब ऐसे रिक्वेस्ट नहीं करते हैं कि मुझे याद करो। बाप क्यों कहते हैं क्योंकि इस याद से ही विकर्म विनाश होनी है। सिर्फ बेहद के बाप की पहचान मिली और निश्चय हो। तकलीफ की बात ही नहीं। भक्ति-मार्ग में बाबा2 करते रहते हैं। जरूर बाप से कुछ वर्सा मिलेगा। राजाई है।

इसलिए पुरुषार्थ की मार्जिन भी है। जितना श्रीमत पर पुरुषार्थ करेंगे। बाप, टीचर, गुरु तीनों की श्रीमत मिलती है। इसकी मत पर चना है। रहना भी अपने घर में है। मत पर चलने में कुछ बिघ्न पड़ती है, सहन करना पड़ता है। वह भी बाप बता देते हैं। कौन सी कौन सी माया के बिघ्न पड़ते हैं। देह अभिमान के कारण वह भी जानते हो। माया का पहला नम्बर का बिघ्न कौन सा है? (देह-अभिमान)। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। क्यों नहीं श्रीमत को मानते हो। बच्चे कहते हैं हम कोशिश तो करते हैं। परन्तु माया करने नहीं देती। बच्चे समझते हैं पढ़ाई में पुरुषार्थ खास जरूरी है। उसके लिए भी जो अच्छा हो उसको फालो करना चाहिए। बनारस में गुप्ता है अच्छी मेहनत करते हैं। उनको अगर मददगार मिले सर्विस लिए तो अच्छा है। मेहनत भी सभी कर रहे हैं। कुछ न कुछ कोशिश करते हैं। जितनी बुधि है उतनी कोशिश करते हैं। पुरुषार्थ बिगर कोई रह न सके। सभी यही पुरुषार्थ करते हैं कि हम बाप से ऊंच वर्सा लेवें। और क्या पुरुषार्थ करेंगे।

कांटे से फूल बनने लिए याद की बहुत जरूरत है। कांटे है 5 विकारों के। वह निकल जाये तो फूल बन जावेंगे। यह निकलेंगे योगबल से। कई बच्चे सोचते हैं फलाना गया, फलाना गया शायद जल्दी हम लोगों को भी जाना पड़े। जब कि ऐसे2 सुनते हैं। खयाल भी न था कि यह जावेंगा। तो जब ऐसी हालत है तो पुरुषार्थ करना चाहिए। मरें तो वही शिव बाबा की याद हो और वसीकरण मंत्र भी याद हो। और कुछ भी याद न हो सिवाय बापके तब प्राण तन से निकले। बाबा आये कि आये। आये कि आये। ऐसे बाबा को याद करने से भी कचड़ा जल जाता है। आत्मा में ही कचड़ा है। आत्मा में है तो शरीर में भी कहेंगे। जन्म-जन्मान्तर का कचड़ा है वह जलना है। जब तुम्हारा कचड़ा जल जाये तो दुनिया भी साफ हो जाये। सारा कचड़ा निकल जाये तुम्हारे लिए। सभी बहिनों और भाईयों को कचड़ा साफ करना है श्रीमत देकर। सिर्फ अपना कचड़ा नहीं साफ करना है। एक बाप को बुलाते ही है कि आकर बाबा दुनिया से कचड़ा साफ करो। बाबा आकर इस विश्व को पवित्र बनाते हैं। किसके लिए? हमारे लिए। इस पवित्र दुनिया में तो तुम ही पहले राज्य करने आते हो। तो खास तुम्हारे लिए तुम्हारे देश में आते हैं। भक्ति-मार्ग और ज्ञान-मार्ग में फर्क बहुत है। कितने अच्छी2 गीत है परन्तु समझा जाता है गीत गाते हैं परन्तु कल्याण तो किसका कर नहीं सकती गीता। कल्याण तो है अपने स्वधर्म में टिकने में। स्वधर्म में टिकने और बाप को याद करने में ही कल्याण है। तुम्हारा याद करना ऐसा ही है जैसे लाईट हाउस फिरता है। स्वदर्शन चक्र को ही लाईट हाउस कहा जाता है। अच्छा बच्चों को गुडनाईट। नमस्ते।

रात्रिक्लास 3-4-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बाप-दादा पूछते हैं राज़ी खुशी बैठे हो? माया बहुत तंग तो नहीं करती है? क्योंकि यह तो समझते हो लड़ाई का मैदान है। कुछ न कुछ तंग करते रहेंगे। किसको कम किसको जास्ती। यह भी खेल है। बाप ने यह खेल समझाया है। यह कोई ब्लाईन्डफेथ नहीं है। यहां तो प्रवृति मार्ग है। कल्प2 यह ईश्वरी य प्रवृति मार्ग होता है। बच्चे भी जानते हैं ऊंच ते ऊंच बाप है। बाप माना ही प्रवृति मार्ग। तुम यथार्थ रीति जानते हो। बाप आये हुये हैं हमको पढ़ा रहे हैं। सहज राजयोग सिखलाते हैं। बच्चे पहचानते जाते हैं। गाया जाता है फादर शोज सन। फादर का परिचय देते रहते हो। तुम बच्चे ही यह समझते हो। कल्प2 हम बाप से वर्सा पाते हैं। कल्प कल्प ऐसे ही समझते जाते हैं। कोई न समझ कर माया के बन कर भूल जाते हैं। फिर उस तरफ दुःख देखते हैं तो फिर कोशिश करते हैं सुख तरफ। बाप आये हो हैं सतयुगी सुखधाम के सम्बन्ध में बान्धने लिए। बच्चे समझते हैं यह लाईफ अच्छी है। यही जन्म-जन्मान्तर, कल्प-कल्पान्तर साथ देंगे। तो क्यों न जीते जी बाप से वर्सा ले लूं। होता है वही जो हर कल्प पहलु होता है। फिक्र की बात ही नहीं।

है। उन से वर्सा पाना है। बाप का तो जरूर बनेंगे। उनको याद करते करते अपने पाप भस्म कर देंगे। मूल बात हेयह। यात्रा पर जाते हैं तो तकलीफ भी आती है। वह है अन्धश्रधा की भक्ति। अभी तो इस पुरानी दुनिया को छोड़ना ही है। जरूर कोशिश करते हैं बाप की श्रीमत पर चलें परन्तु माया चलने नहीं देती हैं। विघ्न डालती है। बाप कहते हैं पुरुषार्थ करो। बाप को याद करो तो खुशी से। घर बैठे भी याद करो। सभी थोड़े ही यहां आ सकते हैं। बाबा ने युक्ति बहुत अच्छी रची है। घर बैठे भी रिफ्रेश हो सकते हैं। याद कर सकते हैं इस दुनिया रहते हुये जैसे नहीं हैं। वैसे घर में रहते भी जैसे कि नहींरहते। बेहद के बाप ने बेहद की सौगात लाई है। ड्रामा अनुसार पुरुषार्थ करते रहते हैं। फिक्र की बात ही नहीं। बना बनाया खेल है। हरख शोक की बात ही नहीं। गायन भी है अमर पुरी तो... यहां कुछ भी होता है अनुभव करते हो अन्यन्य मर जाते हैं तुम कब रोते नहीं हो। कच्चे रहेंगे। इसमें भी प्रीक्षा हो जाती है। ज्ञान में हम रोते नहीं। तुम बच्चों को तो ज्ञान मिल रहा है। अभी कच्चे हैं। आगे चल कर कच्चे पक्के हो जावेंगे। 16कला तो अभी कोई बना न है। बन रहे हैं। बृध अवस्था वाला हो या जवान हो बुधि में ज्ञान, ड्रामा समझ में आ गया तो फिर पक्के हो जाते हैं। वह सदैव हर्षित ही रहेंगे। मूंह से खुशी चमकती रहेगी। जो बोलेंगे मुख से रत्न ही निकलेंगे। तुम भी स्व बसन्त हो। वह भी स्व बसन्त है। ज्ञान की वर्सा बरसाते हो।

कोई भी हालत में मीठे बाप को सभी को याद कराना है। जो बिदेही है वही देहधारियों को समझाते हैं। संगम युग की हर एक बात गुह्य होती है। तुम बच्चे ही जानते हो हम निराकारी और साकारी दोनो के बच्चे हैं। और संगम पर ही यह समझाया जाता है। अच्छा बच्चों को बुडनाईट। नमस्ते।

रात्रिक्लास 5 4-4-68 ओमशान्ति

आज गुरुवार था? (जी हां) गुरु भी होते हैं सदगुरु भी होते हैं। तो गुरुवार भी है तो सतगुरुवार भी है। सतगुरु बृक्षपति है और बच्चों की बृहस्पत की दशा है। इतना जरूर है पढ़ाई में फर्क पड़ता है। जो यहां आते हैं उनको खुशी भी होती है हम बेहद के बाप पास जाते हैं। किस लिए जाते हैं। बाबा हमको शान्तिधाम ले जावेंगे। फिर सुखधाम जावेंगे। यह भी तुम बच्चों की ही बुधि में है। कितने ढेर मनुष्य हैं। भक्ति मार्ग की कितनी सेना है। बाप से जो वर्सा मिला वह अभी पूरा कर भक्ति मार्ग में चकनाचूर हो पड़े हैं। ज्ञान से सदगति पाये हैं वह बिचारे भूल गये हैं। ज्ञानसे तुम समझते हो यह भी पार्ट बजाते रहते हैं। सुख का भी पार्ट बजाया। दुःख का भी पार्ट बजाया। आलराउन्ड भी सभी को नहीं कहेंगे। यह भी आगे चल पता पड़ जावेगा। आलराउन्ड कितना है। सतयुग में जो आदम शुमारी होगी, आद में तो तुम भी हो। यह भी हैं परन्तुफर्क बहुत है। आदम शुमारी पहले पहले जो स्वर्ग में होगी। समझा जाता है 9लाख होगी। यह भी आगे चल का बच्चे समझते तो जरूर जावेंगे। ड्रामा में जो नूंध है वह बताते जाते हैं। तुम समझते जाते हो। पहले से नहीं बता सकते हैं। भक्ति मार्ग वालों को कितनी खुशी होती है। औरतुम बच्चे जब ज्ञान सुनाते हो तो वह खुशी उनको हल्की हो जाती है। तराजू में वजन करेंगे तो तुम्हारा पलड़ा भारी हो जावेगा। तुम निहोरी साल्ड हो जावेंगे। वह खोखले। खालीदुनिया और भरतू दुनिया होती है ना। देखो दोनो में कितना फर्क है। तुम अच्छी रीत जानते हो। यह है ही खाली दुनिया। कुछ है नहीं जैसे। मनुष्यो के पास तो बहुत डालर्स, पाउन्ड्स, मिलटी मिलीयन्स हैं। परन्तु तुम जानते हो यह सभी खाली हैं। ऐसे भी नहीं उनका धन तेरे पास आता है नहीं। तुमको तो नई दुनिया सभी कुछ नया ही मिलेगा। सभी चीजें नई ही होंगी।

पुराने चांदी सोना आखिर में भी नहीं आवेंगे। इतना ऊंच पढ़ाई तुम पढ़ रहे हो। तो पढ़ाई पर ध्यान बहुत देना चाहिए। वृध मातारं भी बहुत ऊंच पद पासकती हैं। बाप जिसकी महिमा अपरअपार है कितना प्रेमसे बैठ पढ़ाते हैं। बहुत प्यारे बच्चे हैं। यह भी कहना पड़ता है नम्बरवार पुरुषार्थ पुरुषार्थ अनुसार प्यारे बच्चे। हर एक का पुरुषार्थ अपना है। बाप है ही गरीब निवाज़। वह फिर कितने शाहुकार बनते हैं। अभी मल पदम प्रपति मनुष्य हैं परन्तु स्थाई नहीं। तुम जानते हो बाकी कितना समय यह सभी होंगे। तो नोट, चांदी आद सभी कुछ खत्म हो जावेंगे कुछ भी चलेंगे नहीं। आग में सोना आद सभी गल जाते हैं। सराफी के दुकान को आग लग जाती है तो सारे सोना काला बुरा हो जाता है। यह तो आग बहुत ही कड़ी है। दिल होती है पुरानी दुनिया कैसे खत्म होती है हमारे लिए। इसको देखें देखें। बाबा कैसे लायक बना कर पुरानी दुनिया खत्म करते हैं। ज्यों का त्यों स्वर्ग का भी साक्षात्कार होगा। अभी हुआ नहीं है। होने का है। अभी समय पड़ा हुआ है। पुरुषार्थ भी ऐसा करना चाहिए जो देखने लायक भी बने। अभी बच्चे तो अपन को भाई भाई समझते होंगे। बाप हम भाईयों को कैसे बैठ पढ़ाते हैं। वही ज्ञान का सागर है। यह कोई अमृत पीने की चीज़ नहीं है। तुम पढ़ते हो जिस से यह ऊंच मर्तबा मिलता है। तुम संस्कार ले जाते हो नई दुनिया के लिए। तुम जानते हो हम संस्कार ले जाते हैं नई दुनिय में। बहुत फर्क है। इसलिए तुम बच्चों को आन्तरीक खुशी बहुत रहनी चाहिए। बच्चे पढ़ते हैं तो दिल में खुशी होगी ना। हम यह पढ़ते हैं। तुम बच्चों को भी नम्बरवारपुरुषार्थ अनुसार खुशी की महसुसता होती है। जो सर्विस करते हैं उन्हों को बाप क़िमत देते रहते हैं। हर प्रकार से मदद भी बच्चों को देते रहते हैं। बाप मदद दे रहा है उसी मददसो फिर बाप के मदद गार बनना है।

यह भी समझते हो बाकी थोड़ा समय है फिर दुःख का नाम-निशान न रहेगा। आयु भी बड़ी होगी। तुम्हारे पास काल आ नहीं सकता। क्योंकि अमरपुरी है। वहां काल नहीं खाता। हम शरीर छोड़ दूसरा ले लेते हैं। यह पुरानी दुनिया का पुराना शरीर है। बाप की याद में पुरानी खुल को उतार घर चले जावेंगे। फिर नई दुनिया में आकर नई खल लेंगे। अन्दर में खुशी बहुत होनी चाहिए। बेहद का बाप बेहद टीचर बन हमको पढ़ाते हैं। बहुत खुशी होनी चाहिए। बाबा हमको पढ़ाते हैं। भगवानुवाच मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। सतयुग का पवित्र राजा बनाता हूं। एकआबजेक्ट भी है। बैज सदैव ही पड़ा रहे। डरो मत कि कोई ठग न लेवे। बच्चों को तो बहुत खबरदार भी रहना चाहिए। उधार पर पैसा तो देना न है किसको। न किसी से तुम उधार लेते ही हो। यह सभी छोड़ देना है। दुनिया में ठगी तो बहुत है। सयानी बुधि चाहिए हर प्रकार से। तुम्हारे जैसा शुद्ध बुधि कोई है नहीं। कितना सारा ज्ञान तुम बच्चों की बुधि में है। गफ्लत करने से चीज़ गवां देंगे। पेटी गंवा देंगे। ज्ञान काल में गफ्लत नहीं होती है। बच्चे आते हैं तो सामान का वजन आद ठीक करके कराओ। ईज्जत न जाये। तुम्हारी ईज्जत तो बहुत ऊंची है। उनकी इज्ज़त तो सेकण्ड में काल आकर उतार सकती है। तुम्हारी ईज्जत थोड़े ही कोई उतार सकते। तो दिल से पूछना चाहिए हम इतने खुशी में हैं। बाप बूढ़ियों को भी तो जवानों को भी पढ़ाते हैं। सिर्फ ममत्व निकाल देना है। इन आंखों से देखने वाली चीज़ में ममत्व न रखना है। बुधि शान्तिधाम सुखधाम तरफ हो। अपना घर अपनी राजाई। तुम खुद ही अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो। हिंसा का नाम निशान नहीं। बच्चे समझते हैं बाबा कितना दूर से आते हैं। कल्याण कारी बाप कल्याणकारी समय पर आते हैं। कल्याणकारी है ही संगम युग। सतयुग की स्थापना बाप ही करते है। 84 जन्म ले हम नीचे आते हैं। बाप और बच्चों की मेला बहुत वेल्युएबुल है। बाप की भी दिल होती है जावें परन्तु कोई कारण है जरूर। बच्चों में सर्विस शौक होना चाहिए। ऐसे2 बच्चों को देख दिल खुशी होती है। अच्छा बच्चों को गुडनाईट नमस्ते।